- प्रकाशनार्थ -

श्री रामकथा मानस महाकाल का चतुर्थ दिवस

26 अप्रैल, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आहूत श्री राम कथा "मानस महाकाल" के अवसर पर व्यासपीठ से पूज्य मोरारी बापू ने कहा- संत के आश्रय से आधार बल मिलता है। हमारे शासकों ने संतों के अनुशासन में शासन किया है। कुम्भ में आध्यात्मिक शक्ति इकठ्ठा होकर ब्रह्म निरूपण किया जाता था। शासकों के साथ धर्म विधि चर्चा होती थी , व्यवस्था और न्याय की विधि पर कुम्भ पर चर्चा होती थी, तत्व चिंतन साहित्य चर्चा होती थी । मुझे पता चला कि प्रभु प्रेमी संघ शिविर में भी ऐसे ही विषय लिए गए हैं जिनपर चिंतन होगा।

जहाँ महाकाल है वहाँ पर कभी अकाल नहीं पड़ सकता। उज्जैन में कभी श्रद्धा का, विश्वास का, विद्या का, तंत्र का, मन्त्र का, श्रृंगार का, बुद्ध पुरुष का , साहित्य का , अच्छे साहित्यकारों का , अच्छे राजा का अकाल नहीं पड़ा। जीवन में अध्यात्म का काफी महत्व है। योग और साधना से कई समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। जिंदगी काफी अच्छी है। बस उसे देखने का नजरिया अच्छा होना चाहिए। उज्जैन आने के बाद ही काकभुसुण्डि जी की सारी दीनता मिट गयी। दीनता का सम्बन्ध मन के साथ जुड़ा हुआ है। दुःख का सम्बन्ध शरीर के साथ है। मलिनता का सम्बन्ध अपने नयन से है। इसलिए गोस्वामी जी कहते है कि किसी सद्गुरु की चरण की रज से मन को विमल करें। गुरु के बिना कोई भी उपासना पूर्ण नहीं होती। साधुता ऐसा दीया है , जो बिन बाती , बिन तेल जलता है। साधुता असंगता का नाम है। वह कोई संबंध नहीं है , वह कोई रिलेशनशिप नहीं है। वह तुम्हारे अकेले होने का मजा है। इसलिए साधु एकांत खोजता है, असाधु भीड़ खोजता है , असाधु एकांत में भी चला जाए तो कल्प ना से भीड़ में होता है। साधु भीड़ में भी खड़ा रहे तो भी अकेला होता है। क्योंकि एक सत्यच उसे दिखाई पड़ गया है कि जो भी मेरे पास मेरे अकेलेपन में है, वहीं मेरी संपदा है। जो दूसरे की मौजूदगी से मुझमें होता है , वही असत्यि है वही माया है। वह वास्तमविक नहीं है।

साधुता को परिभाषित करते हुए पूज्य मोरारी बापू जी ने कहा जिस व्यक्ति में परम प्रेम हो वो साधू है , जिस व्यक्ति में परम परमार्थ का दर्शन हो वो परम साधू है। जो व्यक्ति सत्य के चरण में समर्पित है वो परम साधू है। जिसके आश्रम में परमरम्य वातावरण हो वो परम साधू। जिस युवान का ब्रह्मचर्य परमरम्ये हो जो परमपद को ना छोड़े वो परमसाधू। जिसकी शरण में रह कर लगे कि ये व्यक्ति कभी झूठ नहीं बोलता, वह साधू है। किसी की निंदा ना करे , वह साधू । किसी के साथ स्पर्धा में ना उतरे , वो साधू। ज्यादा से ज्यादा मौन में रहे, वो परम साधू है। सबसे बड़ा कपट है झूठ बोलना। जो झूठ ना बोले वो परम साधू है। रूप अनेक होते हैं। रूप बदले भी जा सकते हैं। स्वरूप एक ही होता है, जो कभी बदला नहीं जा सकता। जिसका स्वरूप परमात्मा से मिलता हो वो परमसाधू है।

श्री रामकथा के शुभ अवसर पर पूज्य भाईश्री रमेश भाई ओझा जी , माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंहजी चौहान, म.प्र.; माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लालजी खट्टर, हरियाणा ने पोथी पूजन किया, सुप्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौडवाल जी, श्रीमती साधना सिंह जी, प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी, शिविर प्रमुख श्री विनोद अग्रवाल जी, संरक्षक श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल जी उपस्थित रहे।

आज के सायंकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया जी का वेणु वादन होगा ।

धन्यवाद -

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड उज्जैन

सम्पर्क - 09991537200